ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी भाषा

Hindi Language in the Era of Globalization

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 27/01/2021, Date of Publication: 28/01/2021

बंदना ठाकुर
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय
नौशहरा, भारत

सारांश

वैश्वीकरण एक प्रक्रिया है जो व्यापारिक क्रियाकलापों के अंतर्राष्ट्रीयकरण की द्योतक है। यह पूरी दुनिया को आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से जोड़ने की प्रक्रिया है। वैश्वीकरण के इस युग में हिंदी भाषा, विश्व भाषा के रूप में उभरी है। हिंदी आज तकनीकी रूप से विकसित है। विश्व के लगभग 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण और शोध कार्य हो रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर हिंदी निरन्तर अपनी आवश्यकता सिद्ध करती जा रही है। नई बाजार संस्कृति में आर्थिक तथा सांस्कृतिक दोनों धरातलों पर हिंदी की भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। आज कंप्यूटर, मोबाइल फोन, ट्विटर, व्हाट्सएप आदि सूचना पोर्टल में इसके प्रयोग ने हिंदी भाषा के विकास में असीम बढ़ोतरी की है।

Globalization is a process which signifies internationalization of business activities. It is a process of connecting the whole world economically, socially and culturally. In this era of globalization, Hindi language has emerged as a world language. Hindi is technically advanced today. Hindi teaching and research work is taking place in more than 100 universities of the world. Hindi is constantly proving its need on the international level. In the new market culture, there have been significant changes in the role of Hindi on both economic and cultural land. Today, its use in information portals such as computers, mobile phones, Twitter, WhatsApp etc. has led to a huge increase in the development of Hindi language.

मुख्य शब्द : वैश्वीकरण, अंतर्राष्ट्रीयकरण, भूमंडलीकरण, प्रौद्योगिकी, तकनीकी।

प्रस्तावना

वैश्वीकरण से तात्पर्य विश्व के विभिन्न समाजों और अर्थव्यवस्थाओं के एकीकरण से हैं। यह उत्पादों, विचारों, दृष्टिकोणों, विभिन्न सांस्कृतिक पहलुओं आदि के आपसी विनिमय के परिणाम से उत्पन्न विचार हैं। वैश्वीकरण कोई नई अवधारणा नहीं है हां, इससे जुड़ी स्थितियां–परिस्थितियाँ नई हो सकती हैं। यह अवधारणा विभिन्न देषों के लोगों, कंपनियों और सरकारों के बीच बातचीत और एकीकरण की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। जिसका मूल आधार व्यापार, विदेशी निवेश द्वारा आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक धरातल पर कब्जा करना है। इस अवधारणा को 'विश्व ग्राम' तथा 'भूमण्डलीकरण' भी कहा जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य वैश्वीकरण के इस दौर में हिंदी की उपादेयता सिद्ध करना है। वैश्वीकरण ने संपूर्ण विश्व को बाजार में तब्दील कर दिया है। हिंदी आज बाज़ार की भाषा बनती जा रही है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हिंदी सिर्फ बाज़ार की ही भाषा है बल्कि हिंदी अपने लचीलेपन के कारण सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीकी भाषा के रूप में उभर कर सामने आई है। बहुत सी अंतरराष्ट्रीय कंपनियां अपना व्यापार चलाने के लिए हिंदी का सहारा ले रही हैं जिससे हिंदी के प्रचार–प्रसार में असीम संभावनाएं सामने आई हैं। हिंदी आज राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय धरातल पर अपनी पहचान बना चुकी है।

वैश्वीकरण की मूल में 'वसुधेव कुटुंबकम' की भावना है, यह भारतीय अवधारणा यहाँ के उदात्त तथा प्राचीन दर्शन को दिखाती है। जो सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार, एक इकाई के रूप में समझने की प्रेरणा देती है जबकि आज वैश्वीकरण का मुख्य क्षेत्र बाज़ार है। बाज़ार के बिना वैश्वीकरण की कल्पना बेमानी है। आज विश्व के सभी देषों का मुख्य उद्देश्य पैसा कमाना और अपने सामान को अनेकों देशों में अधिक से अधिक खपाना और अधिक से अधिक

लाभ उठाना है। फड़िया बी.एल. के अनुसार, "विश्व अर्थव्यवस्था में आया खुलापन आपसी जुड़ाव और निर्भरता के फैलाव को भूमंडलीकरण कहा जाता है।"[1] यह भी समझने वाली बात है कि वैश्वीकरण विभिन्न राष्ट्रों बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बीच परस्पर संवाद तथा एकता स्थापित करने की प्रक्रिया भी है। इसका सम्बन्ध अंतरराष्ट्रीय व्यापार निवेश, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि–उद्योग और अन्य उद्योग क्षेत्रों से है। इस प्रक्रिया का प्रभाव पर्यावरण, संस्कृति, राजनीतिक व्यवस्था तथा भाषा पर भी पड़ता है।

आज वैश्वीकरण के इस प्रभाव के चलते बाज़ार संस्कृति विकसित हो जाने से भाषा का बाज़ारीकरण हो गया है। बाज़ार में सामान को बेचने के लिए एक सरलीकृत आम आदमी की भाषा की जरूरत होती है इसलिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए बहुत आवश्यक हो जाता है कि जिस देश में वे अपना माल बेचें, वहां की भाषा भी सीखें या ऐसे व्यक्तियों को नौकरी दें, जो उस भाषा को जानते हों।

वैश्वीकरण के इस दौर में वैश्विक स्तर पर विकसित राष्ट्रों ने हिंदी की अहमियत को महसूस किया है। अमेरिका के पेंसिल्वेनिया, वाशिंगटन, एरिजोना, कैलिफोर्निया, हवाई, शिकांगो, कॉर्नेल, मिसिग्न आदि बहुत से प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय हैं जो पिछले कुछ वर्षों से हिंदी में अध्ययन अध्यापन करवा रहे हैं, वे अपने आर्थिक लाभ के लिये हिंदी भाषा को बढ़ावा दे रहे हैं।

डॉ. श्री नारायण समीर वैश्वीकरण के इस दौर में भाषा पर बल देते हुए लिखते हैं – "वैश्वीकरण के इस दौर में हमारे बीच जो चीजें बिक रही हैं वे दुनिया के किसी भी हिस्से का उत्पाद हो सकती हैं, पर बिक रही हैं हमारी भाषा में।"[2] इस माल संस्कृति के चलते बाज़ारीकरण से जो भाषा विकसित हुई है वह साहित्यिक, संस्कृति निष्ठ या मानक भाषा नहीं है। बल्कि वह बाज़ार की भाषा है, आम जन की सामान्य भाषा है जिससे अनेक भाषाओं के शब्द जुड़े रहते हैं। यहाँ यह आवष्यक नहीं है कि परिनिष्ठ हिन्दी ही बोलें या मानक भाषा का ही प्रयोग करें क्योंकि ऐसी भाषा वैश्वीकरण के अनुकूल नहीं है। वैश्विक प्रगति के साथ तालमेल ना बैठा पाने के कारण अनेक संस्कृतियां तथा भाषाएं नष्ट हो गई हैं। यह समझने की बात है कि किसी भाषा के बोलने वालों की संख्या यदि एक हज़ार से कम हो जाए तो वह भाषा नष्ट हो जाती है। जब बोलने वालों की संख्या कम होती है तो भाषा संकट उत्पन्न हो जाता है। संचार क्रांति तथा बाज़ारीकरण प्रक्रिया के चलते हिंदी इस संकट से मुक्त है आज हम यह कह सकते हैं कि हिन्दी का अप्रत्यषित विकास हुआ है।

हमारे देष की संस्कृति की संवाहिका संस्कृत रही है। भाषा की यदि बात करें तो यहां की प्राचीनतम भाषा वैदिक संस्कृत रही है। भाषा का विकास दो तरह से होता है – एक साहित्य की भाषा के रूप में, दूसरा बोलचाल की भाषा के रूप में। साहित्य की भाषा कालान्तर में मरणासन्न हो जाती है लेकिन बोलचाल की भाषा साहित्य की भाषा का रूप ग्रहण कर लेती है। अगर हम भाषाओं के विकास की बात करें तो वैदिक संस्कृत–पाली–प्राकृत –अपभ्रंष और फिर अपभ्रंश के अनेक रूपों से भारतीय भाषाओं का विकास हुआ है इसलिए लिखित रूप की अपेक्षा मौखिक/वाचित भाषा अधिक महत्वपूर्ण नज़र आती है। आज के इन संचार–माध्यमों ने इसी भाषा को आधार बनाया और इस पर बल दिया है। विभांषु दिव्याल के शब्दों में , "हिन्दी क्षेत्र में मीडिया के इस्तेमाल की जो भी गतिविधियां चल रही हैं वे हिंदी को समृद्ध कर रही हैं। अगर चैनलों ने क्षेत्र का विस्तार किया है तो हिन्दी क्षेत्रों में चल रही प्रायोगिक सूचनात्मक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों ने हिन्दी भाषा की आंतरिक संरचना को सामान्य अभिव्यक्तियों की दृष्टि से बेहद लचीला और सरल बनाया है।"[3] यद्यपि इसमें कोई संदेह नहीं है कि मौखिक भाषा के विकास की अनन्त सम्भावनाएं इन चैनलों, इंटरनेट, ट्वीटर, ईमेल, वट्सऐप, ब्लाग तथा वेबसाइट्स ने दी है। पर इन सबसे हिन्दी के प्रयोग का एक बड़ा संकट सामने आया है। वह यह है कि एसएमएस करते समय हम देवनागरी लिपि का प्रयोग न कर रोमन लिपि का प्रयोग करते हैं। कहने को, भाषा हिन्दी है पर भाषा की मूल प्रकृति 'लिपि' आज संकट के दौर से गुजर रही है। संचार माध्यमों के चलते इससे सचेत तथा सावधान रहने की आवश्यकता है।

आज हिन्दी में प्रसारित होने वाले चैनलों की यदि बात करें तो वे सब हिन्दी के रूप में खिचड़ी भाषा का प्रयोग करते हैं। कबीर के लिए कहा गया कि उनकी भाषा पंचमेल खिचड़ी है लेकिन आज जिस भाषा का प्रयोग हम देखते हैं उसे कोई भी भाषा विद्वान साहित्यकार, मानक भाषा को मानने वाला कोई भी व्यक्ति स्वीकार नहीं करेगा। हालांकि युवावर्ग, बच्चे, इसी भाषा को अपनी भाषा बना चुके हैं। उदाहरण स्वरूप किसी भी दैनिक–साप्ताहिक समाचार पत्र, विज्ञापन देख लीजिए इनमें प्रारम्भ और अन्त में तो क्रियापद हिन्दी में मिलेगा लेकिन बीच में अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी के शब्दों का मिश्रण ही मिलेगा। जैसे 'चचमंस' नजरअंदाज, 'केबिनेट की बैठक', 'वोट बैंक की राजनीति', 'सिद्धान्तों को डाईल्यूट करना', 'वोट बैंक को इनकरेज करना' इत्यादि। यहां तक कि समाचार पत्रों के नामों में भी खिचड़ी भाषा देखने को मिलती है – नवभारत टाइम्स, सांध्य टाइम्स, इंडिया टूडे, अवाम केसरी आदि। हिन्दी में विदेषी शब्दों को अपने में शामिल करने तथा ग्रहण करने की क्षमता है। इस प्रकार हिन्दी में लचीलापन है और यह लचीलापन नवीन शब्द निर्माण में सहायक हो जाता है। हालांकि यह भी ठीक है कि हिन्दी को अपनी प्रकृति को भी बचाये रखना है और दबावों से अपनी अस्मिता को बनाये रखते हुए प्रखर रूप से उभरना है। श्री नारायण समीर कहते भी हैं – "हमें अपने बदलते समय की अपेक्षाओं के अनुरूप हिन्दी का परिवर्द्दन और संवर्द्धन करना होगा।"[4] मात्र शुद्धतावाद से काम नहीं चल सकता। हम देखते हैं कि शुद्धतावाद के कारण ही संस्कृत समाप्त हो गई, रोक–टोक के कारण हिन्दी का भी अहित होगा इसलिए वर्तमान परिद्रष्य को देखते हुए हिन्दी में लचीलापन आवश्यक है।

वैश्विक करण में निजिकरण का प्राधान्य बड़ा है। इसमें उत्पादन को स्थानीय भाषा के जरिये पहुंचाया जाता

है। हिन्दी को नजरअन्दाज कर भूमण्डलीकरण की भाषायी प्रक्रिया नहीं बढ़ सकती क्योंकि हिन्दी का उपभोक्ता वर्ग बहुत ज्यादा है। आज उत्पादक की भाषा भले ही अंग्रेजी हो लेकिन उपभोक्ता की भाषा हिन्दी ही है। इसीलिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के 'प्रचार' की भाषा आज हिन्दी बनती जा रही है।

गंगा प्रसाद विमल की शब्दों में, "हिंदी के अंतराराष्ट्रीय रेखाओं को के बारे में जो तस्वीरें उभरती हैं वह भारत के भावी भाषा समाज की विश्व भागीदारी को आष्वसितदायक संकेत सामने लाती हैं।"[5] भूमण्डलीकरण बाज़ारवाद ने प्रौद्योगिकी तथा ज्ञान–विज्ञान को हिन्दी से जोड़ने की स्थितियों को भी बढ़ावा दिया है। हिन्दी भाषी राज्यों में विज्ञान पाठ्यक्रम की पुस्तकें हिन्दी में ही मिलती है। वैज्ञानिक एवं औद्योगिकी अनुसंधान परिषद (ब्ैप्) तथा प्रकाषन एवं सूचना निदेषालय के आँकड़ों के अनुसार पिछले दिनों "देष में कुल 3344 वैज्ञानिक तथा तकनीकी पुस्तकें हिन्दी में प्रकाषित हुई हैं जिनमें से अधिक मौलिक पुस्तकें हैं। साथ ही विभिन्न वैज्ञानिक विषयों की कुल 321 पत्रिकाएं हिन्दी में प्रकाषित होती है।"[6] उदाहरण के लिए वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद की पत्रिका 'विज्ञान प्रगति' द इंस्टीटयूट आफ इंजीनियर्स का हिन्दी जर्नल, नेषनल परमाणु अनुसंधान केंद्र की पत्रिका 'वैज्ञानिक' भारतीय विज्ञान संस्थान की पत्रिका, विज्ञान परिचय तथा केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की पत्रिका 'विज्ञान गंगा'। ये ज्ञान–विज्ञान की पत्रिकाएं हिन्दी भाषा में प्रकाषित हैं।

प्रौद्योगिकी सम्बंधी विकास के कारण विदेषों में हिन्दी सीखना सरल हो गया है। कम्पयुटर साधित भाषा षिक्षण के लिए 'लीला हिन्दी प्रबोध, लीला हिन्दी प्रवीण तथा लीला हिन्दी प्राज्ञय जैसे साफ्ट्वेयर उपलब्ध हैं। बाजार के दबाव के कारण अमेरिकी कम्पनी को हिन्दी में ईमेल भेजने की तकनीक ईजाद करनी पड़ी और माईक्रोसाफ्ट को ही देखें तो उसने अपने Windows Oprating System में हिन्दी में काम करने की व्यवस्था को शामिल किया। वास्तविकता यह है कि वैश्वीकरण के कारण हिन्दी की पहुँच व्यापक हुई है जिससे अन्य भाषा–भाषी हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं। अनेक विदेषी चैनल हिन्दी में अपने कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं। स्टार वर्ल्ड, स्टार मूवीज जैसे विश्व–व्यापी चैनलों में विज्ञापन की भाषा हिन्दी देखने को मिलती है। अंग्रेजी 'व्गवितक' जैसे शब्दकोषों में आए दिन हिन्दी के नये–नये शब्द जुड़ रहे हैं। आज भारतीय मूल के 130 से अधिक देष हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं। 100 से अधिक विश्व विद्यालयों में पीएच.डी. तक हिन्दी में अध्ययन अध्यापन होता हैं।

हिन्दी में अनुवाद को प्रौद्योगिकी से जोड़ने व मषीनी अनुवाद को बढ़ावा देने की भी आवष्यकता है इससे हिन्दी में एक नयी भाषा 'यांत्रिक भाषा' संभावित है। इसको यंत्रों की भाषा बनाने के लिए संक्षिप्त अक्षर इइतमअपंजपवदेए बवकम वतकेए प्रयोक्तियों को विकसित करना आवष्यक है। सिर्फ साहित्य ही नहीं बल्कि व्यवसाय केंद्रित हिन्दी का पठन–पाठन शुरू होना चाहिए। क्योंकि उपभोक्तावाद के इस युग में सिर्फ सिद्धांतों से काम नहीं चलेगा। इसे अपना अस्तित्व बचाने के लिए व्यवसायिक पुट देने की भी आवष्यकता है।

निष्कर्ष –

अंततः हिंदी के वैश्विक रूप के संदर्भ में कहा जा सकता है कि हिन्दी में चिकित्सा, विज्ञान, विधि, वाणिजय, अभियांत्रिकी के क्षेत्र में पाठ्य सामग्री उपलब्ध करवाई जाए ।

अनुवाद की भूमिका भाषा की संपन्नता और समृद्धि में सहायक होती है इसलिए विविध विषयों पर हिंदी में अनुवाद कराया जाए ताकि दूसरी भाषाओं के साथ हिंदी के संबंधों में मजबूती आए। भाषाई–अस्मिता की चुनौती भी अहम है इसलिए हिंदी भाषा का मानकीकरण भी आवश्यक है। अंततः हमें हिंदी के विकास की चुनौतियों के समाधान खोजने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *बी.एल. फड़िया. अतंरराष्ट्रीय राजनीति. साहित्य भवन पब्लिकेषन्स, आगरा, 2009 पृ. 526*
2. *डॉ. श्री नारायण समीर. हिंदी आकांक्षा और यथार्थ. लोकभारती प्रकाशन, 2012 पृ. 33*
3. *विभांशु दिव्याल. मीडिया की हिंदी. सं. महिपाल सिंह, देवेन्द मिश्र. ब्रहम प्रकाषन, 2010 पृ. 76*
4. *डॉ. श्री नारायण समीर. हिंदी आकांक्षा और यथार्थ. लोकभारती प्रकाशन, 2012 पृ. 37*
5. *गंगा प्रसाद विमल. हिंदी का विश्व स्वरूप. संपादक; महिपाल सिंह; देवेंद्र मिश्र. हिंदी का वैश्विक स्वरूप. वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 2008*
6. *डॉ. श्री नारायण समीर. हिंदी आकांक्षा और यथार्थ. लोकभारती प्रकाशन, 2012 पृ. 61*